सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

मैं प्रसन्नचित्त हूँ।

प्रसन्नचित्त आत्मा अर्थात स्वयं से प्रसन्न, सर्व से प्रसन्न और सेवा से प्रसन्न। अगर इन तीनों में प्रसन्नता है तो बापदादा को स्वत: ही प्रसन्न किया जा सकता है और जिस आत्मा पर बाप प्रसन्न है वह सदा सफलता मूर्त बन जाती है।

योगाभ्यास - अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य को देखें... स्वयं भगवान मेरा... सबकुछ मेरा हो गया... उसने अपने सर्व वरदान और सर्वशक्तियाँ मुझे दे दीं... वाह मेरा सर्वश्रेष्ठ भाग्य.. इस अंतिम जन्म में हर पल भगवान का साथ है...। स्वयं भगवान हमें सर्व सम्बन्धों का प्यार दे रहा है... जिसे सारी दुनिया पुकार रही है उसका सत्य ज्ञान मुझे मिल गया... हम उसकी छत्रछाया में आ गए...।

धारणा - सदा खुश रहना - सदा प्रसन्न रहने के लिए अपने इस ब्राह्मण जीवन की विशेषताओं को जान कर कार्य में लगाओ। क्योंकि विशेषताओं को कार्य में लगाने से एक विशेषता अन्य विशेषताओं को स्वत: ले आती है।

चिंतन- अल्पकाल की प्रसन्नता और सदाकाल की प्रसन्नता में अंतर? अप्रसन्नता का कारण? सदा प्रसन्न रहने की विधि?

प्रिय साधकों -अपने जीवन का लक्ष्य बना लें...कि कुछ भी हो जाए हमें अपनी प्रसन्नता को नहीं छोड़ना है क्योंकि आपकी प्रसन्नता ही संसार की प्रसन्नता है। आपका प्रसन्नमूर्त चेहरा ही परमात्म प्रत्यक्षता का आधार है इसलिए सदा प्रसन्न रहना और सबको प्रसन्न करना है।

मैं सारथी और साक्षी हूँ।

सारथी अर्थात् इस शरीर रूपी रथ का मालिक मैं आत्मा रथवान। स्वयं को सारथी समझने से सर्व कर्मेन्द्रियां स्वत: कंट्रोल में आ जाती हैं। किसी भी कर्मेन्द्रिय के वशीभूत हो नहीं सकते।

योगाभ्यास - मैं आत्मा राजा...भृकुटी सिंहासन पर विराजमान हूँ...सर्व कर्मेन्द्रियों का मालिक हूँ...इस स्मृति द्वारा सर्व कर्मेन्द्रियों की दरबार लगायें।..संगमयुग पर उनकी महानताओं की याद दिलायें...फिर एक-एक कर्मेन्द्रिय को पवित्र वायब्रेशन्स दें...अनुभव करें कि सर्व स्थूल एवं सूक्ष्म कर्मेन्द्रियां शांत और शीतल हो गयी हैं।

धारणा - साक्षीभाव - इस ड्रामा में सभी आत्माएँ पार्टधारी हैं, सभी का पार्ट फिक्स है, एक का पार्ट न मिले दूसरे से... इसी स्मृति में रह हरेक का पार्ट साक्षीभाव से देखें।

चिंतन - सारथी स्वरूप की स्मृति में रहनेवालों की निशानियाँ लिखें। सारथीपन की स्टेज को कैसे बढ़ाएं? सारथी स्वरूप की स्थिति में रहने से फायदों के बारे में विचार करें।

प्रिय साधकों - निरंतर योगयुक्त स्थिति बनाने का आधार है सारथी स्वरूप की स्मृति। इस विधि से ही ब्रह्मा बाप ने नम्बर वन की सिद्धि प्राप्त की। तो आइए, हम सभी अपने सारथी स्वरूप की स्मृति द्वारा ब्रह्मा बाप समान बनने का लक्ष्य रखें।

मन को सबल... पेज 3 का शेष

तर्कपूर्ण विधि

तर्कपूर्ण विधि में आप मरीज को और खुद को यह विश्वास दिलाते हैं कि रोग आपके अवचेतन मन के झूठे विश्वासों, निराधार डरों और नकारात्मक ढाँचों के कारण है। आप अपने मस्तिष्क में स्पष्टता से इस पर तर्क करते हैं और रोगी को विश्वास दिला देते हैं कि बीमारी विचार के एक विकृत ऐंठन भरे ढाँचे के कारण है, जो शरीर में प्रकट हो गया है। आप रोगी के सामने स्पष्ट करते हैं कि विश्वास का परिवर्तन ही हर उपचार का आधार है तथा अवचेतन मन ने शरीर और इसके सभी अंगों की रचना की है, इसलिए यह जानता है कि इसका कैसे उपचार होता है। इसीलिए यह इसका उपचार कर सकता है और यह आपके बोलते समय भी ऐसा ही कर रहा है। आप आस्था और आध्यात्मिक समझ द्वारा रोगी को मुक्त करते हैं। आपका मानसिक और आध्यात्मिक प्रमाण अजेय है। चूंकि सिर्फ एक ही मस्तिष्क है, इसलिए आप जिसे सच मानते हैं, वह रोगी के अनुभव में प्रकट हो जाता है और उपचार हो जाता है।

परम विधि

परम विधि का प्रयोग करने वाला व्यक्ति रोगी का नाम लेता है, फिर वह ईश्वर और उसके गुणों के बारे में खामोशी से सोचता है, जैसे, ईश्वर परम आनंद है, असीमित प्रेम है, असीमित बुद्धिमता है, सर्वशक्तिमान है इत्यादि। जब वह इस तरह की बातें सोचता है, तो उसकी चेतना ऊपर उठकर एक नए आध्यात्मिक धरातल पर पहुँच जाती है। वह महसूस करता है कि ईश्वरीय प्रेम का महासागर रोगी के मन और शरीर में मौजूद हर गड़बड़ चीज़ को डुबा रहा है, जिसे दूर करने के लिए वह प्रार्थना कर रहा है। वह महसूस करता है कि ईश्वर की सारी शक्ति और प्रेम अब रोगी पर केंद्रित हो रहा है। जो भी कष्टकारी या परेशानी भरा है, वह जीवन और प्रेम के असीम महासागर की मौजूदगी में अब पूरी तरह गायब हो चुका है।

आदेश विधि

हमारे शब्दों में शक्ति, उनके पीछे की भावना और विश्वास के अनुरूप आती है। जब हमें यह एहसास होता है कि हमारे शब्दों के पीछे की दुनिया को हमारे पक्ष में चलाने वाली शक्ति है, तो हमारा आत्मविश्वास बढ़ जाता है। आप इसमें और ज़्यादा शक्ति जोड़ने की कोशिश नहीं करें। इसमें किसी तरह का मानसिक दबाव, बलप्रयोग या मानसिक कुश्ती नहीं होनी चाहिए। आप जो आदेश देते हैं और जिसे सच महसूस करते हैं, वह सच हो जाएगा। इसलिए सदैव सद्भाव, सेहत, शांति और समृद्धि के आदेश दें। इन विधियों एवं तकनीकों का प्रयोग कर आप किसी भी रोग, परेशानी, समस्याओं इत्यादि से छुटकारा पा सकते हैं। इन विधियों का अपने जीवन में प्रयोग कर शांति, सफलता, स्वास्थ्य, सामंजस्य प्राप्त करें।

अमरावती-महा.। व्यसन मुक्ति के विषय पर प्रशिक्षण देने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु.सीता, म.रा.परिवहन मंडल के महाजन भाई,डिवीज़नल कंट्रोलर, डवरे भाई,रीजनल मैनेजर तथा ड्राइवर व कंडक्टर।

अल्कापुरी-वड़ौदा। महिला दिवस के अवसर पर दीप प्रज्वलन करते हुए ब्र.कु.सरला, ब्र.कु.चक्रधारी, ब्र.कु.दमयंती, ब्र.कु.निरंजना, राज्य महिला आयोग की चेयरपर्सन लीला अंकोडीया, डिप्युटी मेयर सीमा मोहिले तथा अन्य प्रतिष्ठित गण।

समराला-पंजाब। त्रिमूर्ति शिव जयन्ती महोत्सव पर दीप प्रज्वलित करते हुए एम.एल.ए. मलकीत कौर ढिल्लों, जिला प्रधान भा.ज.पा. इनवेस्टर सेल के इन्द्रेश जैतका, ब्र.कु.नीलम तथा अन्य।

चिरकुंडा-झारखंड। महाशिवरात्रि के अवसर पर शिवध्वज फहराते हुए ब्र.कु.अर्चना, हिरोनमोय चैटर्जी,डिप्युटी चीफ इंजीनियर,रघुनाथ थर्मल पावर।

गुड़गांव। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में हुए कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए म्यूनीसिपल कार्मिटी के डिप्युटी मेयर यशपाल बत्रा, ब्र.कु.रंजना तथा अन्य।

रघुवीर पुरी-अलीगढ़(उ.प्र.)। नगर उपायुक्त शैलेन्द्र भाई को शिवरात्रि पर ध्वजारोहण के उपरान्त ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुदेश।

काठमाण्डु-नेपाल। 78वीं महाशिवरात्रि के अवसर पर निकाली गई "विश्व सद्भाव शांति पद यात्रा" का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ करते हुए संविधान सभा के माननीय सभासद नविन्द्रराज जोशी, माननीय सभासद दिप नारायण साह, रतन दादा,लंडन, ब्र.कु.राज तथा अन्य।

सिकंदरा बोदला-आगरा। शिवरात्रि के पावन अवसर पर रैली के दौरान विधायक जगन प्रसाद गर्ग, ब्र.कु.सरिता, ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.मधु, ब्र.कु.बलवीर, ब्र.कु.बृजमोहन तथा अन्य।

जम्मू। महाशिवरात्रि पर्व पर झंडा फहराने के पश्चात् मुख्य अतिथि कृषि मंत्री गुलाम हसन, पूर्व मंत्री आर.एस.छिब, ज़ेड.ए. भट्टी, स्वामी कुमार, ब्र.कु.सुदर्शन, ब्र.कु.रविंदर तथा अन्य।

झालावाड़-राज.। शिव जयन्ती के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए ब्र.कु.मीना, वकील विष्णु प्रसाद पाटीदार तथा अन्य।

बैंगलोर। 78वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर 30 फीट ऊँचे रामेश्वर शिवलिंग के उद्घाटन समारोह में श्री श्री श्री शिवरुद्र महास्वामीजी,बेलीमूट महासंस्थानम्, एम.पी. पी.सी.मोहन, एम.लक्ष्मीनारायणा,कमिशनर बी.बी.एम.पी., बी.वी.गणेश,कॉरपोरेटर बी.बी.एम.पी., श्री देशपांडे,सीनियर एड्वोकेट, ब्र.कु.पद्मा तथा अन्य विशिष्ठ अतिथि मौजूद रहे।

कर्वेनगर-पुणे। अखिल भारतीय अपंग साहित्य सम्मेलन में भारत की पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.नीरू। साथ हैं ब्र.कु.योगिता, ब्र.कु.भोसले माता, लेखिका रत्ना चौधरी तथा अन्य।